Dr. PRITI RANJAN

Assistant Professor

H. D Jain College Ara

B. A Part - I

Topic - Chhathi shatabdi isa purv

छठी शताब्दी ईसा पूर्व —

part - I

छठी शताब्दी ईसा पूर्व

बुद्ध के जन्म के पूर्व लगभग छठीं शताब्दी ई० पू० में भारत वर्ष 16 महाजनपदों में बँटा हुआ था, जिसका उल्लेख हमें बौद्ध ग्रंथ के 'अंगुत्तर निकाय' में मिलता है। इसके अलावा बौद्ध ग्रंथ महावस्तु तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र से महाजनपदों के बारे में सूचना मिलती है।

वैदिक युग के जनपद अब महाजनपद में ढल गए थे। महाजनपद अब वैदिककालीन राज्यों की अपेक्षा अधिक विस्तृत तथा शक्तिशाली थे। महाजनपदों का विस्तार उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान तथा दक्षिण में गोदावरी तक हुआ। इस संदर्भ में खास बात यह है कि 15 महाजनपदों नर्मदा के उत्तर में स्थित था।

महावस्तु के सोलह महाजनपदों की सूची में गंधार और कंबोज के स्थान पर पंजाब में शिवी तथा मध्य भारत में दर्शन नामक महाजनपद का नाम मिलता है। महाजनपद दो प्रकार के थे – राजतंत्रात्मक राज्य एवं गणतंत्रात्मक राज्य। अंग, मगध, काशी, कोशल, चेदि, वत्स, कुरु, पान्चाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गान्धार तथा कम्बोज राजतन्त्रात्मक राज्य थे जबकि वज्जि और मल्ल गणतंत्र थे। ऐसे राज्यों का शासन राजा द्वारा न होकर गण अथवा संघ द्वारा होता था। आधुनिक काल में गणतंत्र प्रजातंत्र का समानार्थी है किन्तु प्राचीन काल के गणतंत्र को आधुनिक अर्थ में कुलीनतंत्र या निरंकुश तंत्र कह सकते हैं क्योंकि इसमें शासन की शक्ति सम्पूर्ण जनता के हाथों में न होकर किसी कुल विशेष के प्रमुख व्यक्तियों के हाथों में होती है।

उदाहरण

A^3 - अवन्ति, अश्मक, अंग
C^1 - चेदि
G^1 - गंधार
K^4 - काशी, कोशल, कम्बोज, कुरु
M^3 - मगध, मत्स्य, मल्ल
P^1 - पांचाल
S^1 - सूरसेन
V^2 - वृज्जि, वत्स

सबसे अधिक महाजनपद गंगा घाटी में देखे जा सकते है।

1. काशी - आधुनिक वाराणसी एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को काशी महाजनपद कहा जाता। काशी की राजधानी - वाराणसी - थी. प्रारंभ में यह एक शक्तिशाली राज्य था, किन्तु आगे चलकर यह कोशल के साम्राज्यवाद का शिकार हो गया। जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन काशी के ही राजा थे. सोननन्द जातक के अनुसार - एक समय मगध, कोशल तथा अंग पर काशी का अधिकार था। लेकिन आगे चलकर अजातशत्रु के समय इसे मगध में मिला लिया गया। काशी अपने सूती कपड़ो तथा घोड़ो के व्यापार के लिये विख्यात था।

2. अंग → उत्तरी बिहार का आधुनिक भागलपुर तथा मुंगेर जिला इसके अन्तर्गत आता था. इसकी राजधानी चम्पा थी। महाभारत तथा पुराणों में चम्पा का प्राचीन नाम मालिनी मिलता है। बुद्ध के समय चम्पा की गणना - छः महानगरों में की जाती थी। दीघ निकाय के अनुसार - इस नगर के निर्माण की योजना सुप्रसिद्ध वास्तुकार महागोविन्द ने प्रस्तुत की थी। एक लंबे संघर्ष के पश्चात् यहाँ के शासक ब्रह्मदत्त को मगध शासक बिम्बिसार ने पराजित कर अंग को मगध का एक हिस्सा बना लिया।

3. कोशल → उत्तर प्रदेश के वर्तमान फैजाबाद जिले में स्थित यह महाजनपद उत्तर में नेपाल, दक्षिण में सई नदी, पश्चिम में पांचाल एवं पूर्व में गण्डक नदी तक फैला हुआ था। सरयू नदी इसे दो भाग में विभाजित करती है। उत्तरी कोशल की आरंभिक राजधानी श्रावस्ती थी। बाद में यह साकेत या अयोध्या हो गई। दक्षिण कोशल की राजधानी कुशावती थी। इसे नग्नजित तथा विदुधान के प्रयास से कोशल राज्य का विस्तार हुआ। काशी, मल्ल तथा शाक्य को कोशल के साम्राज्यवाद का शिकार होना पड़ा परंतु मगध शासक अजातशत्रु ने कोशल को मगध में मिला लिया।

4. वज्जि → वज्जि का शाब्दिक अर्थ होता है, पशुपालक समुदाय। यह आठ राज्यों का एक संघ था, इसमें वज्जि के अतिरिक्त वैशाली के लिच्छवी, मिथिला के विदेह तथा कुण्डग्राम के ज्ञातृक विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। वज्जि संघ के अन्य चार राज्य संभवतः उग्र, भोग, इक्ष्वाकु तथा कौरव थे। मगध के शासक अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार की सहायता से वज्जि कुल पर विजय प्राप्त कर ली। महावस्तु से ज्ञात होता है कि महात्मा बुद्ध लिच्छवियों के निमंत्रण पर वैशाली गए थे। वज्जि संघ की राजधानी विदेह एवं मिथिला थी.

5. मल्ल → आधुनिक देवरिया एवं गोरखपुर क्षेत्र में स्थित मल्ल क्षेत्र दो भागों में बंटा था, जिसमें एक की राजधानी कुसावती अथवा कुसीनारा एवं दूसरे की राजधानी पावा थी। कुसीनारा में महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण एवं पावा में महावीर को निर्वाण प्राप्त हुआ।